International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 08-05-2026, Accepted: 08-06-2026, Published: 23-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 335-336

राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम में केसरी सिंह बारहठ एवं अर्जुन लाल सेठी की जुगलबंदी

चरण सिंह
शोध छात्र, इतिहास विभाग, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhssr.2026.12.2.12212

सारांश
राजपूताना में चल रही इस राष्ट्रीय एवं क्रान्तिकारी आन्दोलन की धारा को क्रान्तिकारी केसरी सिंह बारहठ, अर्जुनलाल सेठी, राव गोपाल सिंह खरवा, विजय सिंह पथिक जैसे कई क्रान्तिकारियों ने नेतृत्व प्रदान किया तथा क्रान्ति का बीजारोपण किया। ब्रिटिश हुकुमत के आगे किसी एक व्यक्ति द्वारा विरोध नामुनमकिन था ऐसे में इन क्रान्तिकारियों ने एक संगठनात्मक तरीके से एकजुट होकर क्रान्तिकारी गतिविधियों को अंजाम दिया। इसमें केसरी सिंह बारहठ तथा स्वतन्त्रता सेनानी अर्जुनलाल सेठी का अमूल्य योगदान रहा। एक ने क्रान्ति को जमीन पर उतारने का काम किया तो दूसरे ने इस क्रान्तिकारी संगठन को शिक्षित प्रशिक्षित किया। प्रस्तुत शोध पत्र में हम बारहठ केसरी सिंह तथा अर्जुनलाल सेठी की राजस्थान के स्वतन्त्रता संग्राम में जुगलबंदी पर प्रकाश डालेंगे।

मूल शब्दः केसरी सिंह बारहठ, अर्जुनलाल सेठी, क्रान्तिकारी आन्दोलन, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, राजपूताना में क्रान्ति एवं जनजागरण, वर्धमान पाठशाला, कोटा केस

हमारा देश भारत् ब्रिटेन के औपनिवेशिक शासन के तहत लगभग 200 वर्षो के लम्बे कालखण्ड तक गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा रहा। देश को आजाद करवाने में अनेको राष्ट्रीय नेताओं, वीर पुरूषो और क्रांतिकारियो ने अपना बलिदान दिया। देश में आजादी की लड़ाई कई संगठनों एवं विचार धाराओं द्वारा अलग–अलग मोर्चो पर लड़ी जा रही थी। 19 वीं सदी के अन्तिम दशको में भारत में क्रान्तिकारी विचाराधारा पनपने लगी तथा ऐसा भले कैसे हो सकता था कि इस आग की तपन राजपूताने में महसूस नही की जा रही हो। इस तरह राजपूताना में राष्ट्रीय आन्दोलन के दौर की शुरूआत हुई।

व्यक्तित्व परिचय

केसरी सिंह बारहठ मेवाड़ राज्य की शाहपुरा रियासत के निवासी थे जिन्होंने मेवाड़ तथा कोटा राज्य में लम्बे समय तक कार्य किया। शुरूआती दौर में ये सामाजिक धार्मिक तथा शिक्षा सुधार के कार्यो से जुड़े रहें तथा 20 वीं शताब्दी के शुरूआती दशक के बाद ये क्रान्ति पथ की ओर अग्रसर हुये। उनके लिखे प्रसिद्ध 'चेतावणी रा चुंगटिया' नामक 13 सोरठो का महाराणा उदयपुर पर इतना असर हुआ कि महाराणा फतेहसिंह कर्जन के दिल्ली दरबार में बिना भाग लिये ही मेवाड़ लौट आये।

अर्जुनलाल सेठी जयपुर राज्य के निवासी थे तथा राजपूताने के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं क्रान्तिकारी नेता थे। देशभक्ति के विचारो से ओत–प्रोत उन्होंने राज्य के प्रधानमंत्री का पद ठुकराते हुए कहा कि ''अगर अर्जुनलाल नौकरी करेगा तो अंग्रेजो को भारत से बाहर कौन निकालेगा''। उनकी वर्धमान जैन पाठशाला क्रान्तिकारियों की पौध तैयार करने वाली एक राष्ट्रीय चरित्र की संस्था थी।

केसरी सिंह बारहठ एवं अर्जनलाल सेठी की जुगलबंदी (साझा प्रयास)

केसरी बारहठ तथा अर्जुनलाल सेठी दोनों ने राजपूताना प्रदेश के क्रान्ति यज्ञ में अपनी–अपनी आहुति दी तथा दोनों ने मिलकर साझे प्रयास भी किये, उनका सम्पर्क एक दूसरे से बखूबी था तथा वे अन्य क्रान्तिकारियों के बीच कड़ी के रूप में भी कार्य करते थे। कई संगठनों, कार्यो एवं योजनाओं में उनका सहअस्तित्व था।

क्रान्तिकारी संगठन

इन क्रान्तिकारी गतिविधियों को देखते हुए यह विश्वास करना मुश्किल है कि यह सब बिना किसी सक्रिय संगठन के हो रहा था। अर्जुनलाल सेठी ने जयपुर में जैन विद्यालय पहले से ही खोल लिया था जिसकी दूसरी शाखा इन्दौर में भी बनी। इस विद्यालय की शिक्षा दीक्षा निराली ही थी, रामनारायण चौधरी जिक्र करते है कि सेठी का वर्धमान जैन विद्यालय उस समय की राष्ट्रीय शिक्षा का न केवल विकल्प था बल्कि यह उससे भी एक कदम आगे था। तत्कालीन सरकारी विद्यालयों में अग्रेजो के डर से दमघोटू वातावरण पनप रहा था उसी समय सेठी जी का विद्यालय राष्ट्रवाद और क्रान्ति के केन्द्र के रूप में उभरा। यहां केसरी सिंह ने अपने पुत्र प्रताप सिंह तथा जामाता ईश्वर दान को क्रान्तिकारी शिक्षा ग्रहण करने हेतु भेजा तथा कई मौको पर वह स्वयं भी उस पाठशाला में भाषण आदि कार्यो हेतु जाते थे।

ए.जी.जी. राजपूताना ने 7 अगस्त 1914 को जयपुर महाराजा माधोसिंह को लिखे पत्र में जिक्र किया है कि राजपूताना में पिछले कई वर्षो से गुप्त राजनैतिक संगठन सक्रिय है कहा जाता है कि वीर भारत सभा जो कि राजपूताना में अभिनव भारत की क्रान्तिकारी शाखा थी जिसका गठन केसरी सिंह बारहठ स्वयं ने किया था तथा इसमें अर्जुनलाल सेठी, गोपाल सिंह खरवा जैसे कई क्रान्तिकारी सक्रिय थे

शिक्षा,राष्ट्रीयता और क्रान्ति

इन दोनों क्रान्तिकारियों द्वारा अपने उद्धेश्यों की पूर्ति हेतु शैक्षणिक संस्थाओं एवं शिक्षा प्रचार का सहारा लिया गया। सेठी जी की वर्धमान पाठशाला का जिक्र उपर किया जा चुका है, इसी तर्ज पर केसरी सिंह बारहठ ने कोटा व जोधपुर में चारण राजपूत बोर्डिंग हाउस खोले तथा क्रान्ति की शिक्षा प्रदान कर नवयुवको को तैयार किया।

अपने पत्र में ए.जी.जी. राजपूताना लिखते है कि राजपूताना में शिक्षा के माध्यम से राजद्रोह फैलाने की संदिग्ध गतिविधियों में केसरी सिंह बारहठ तथा अर्जुनलाल सेठी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी इनका केन्द्र क्रमशः कोटा, जोधपुर तथा जयपुर मुख्यतः था। इनके द्वारा की गई क्रान्तिकारी डकैतियाँ का भी मुख्य उद्धेश्य इस क्रान्ति शिक्षा हेतु धन एकत्रित करना था ताकि शिक्षा प्रचार से राष्ट्रीयता का बीजारोपण किया जा सके।

क्रान्ति का बीजारोपण एवं घटनाऐं

शंकर सहाय सक्सेना अपने लेख ''स्वतन्त्रता संग्राम के तीन महान देशभक्त'' में लिखते है कि महाविपल्वी नायक रास बिहारी बोस ने राजपूताना में सशस्त्र क्रान्ति के संचालन का दायित्व ठाकुर केसरी सिंह, विजय सिंह पथिक और राव गोपाल सिंह खरवा को सौंपा था तथा क्रान्तिकारी युवकों के प्रशिक्षण का काम अर्जुनलाल सेठी के जिम्मे था।

इन क्रान्तिकारी डकैतियों का श्री गणेश ठाकुर केसरी सिंह बारहठ द्वारा जोधपुर के भ्रष्ट महन्त प्यारेलाल की हत्या करके किया गया इस घटना से उन पर महन्त की हत्या का मुकदमा चला तथा आजीवन कारावास की सजा हुई, यह उस समय का महत्वपूर्ण राजनैतिक केस था।

अर्जुनलाल सेठी की पाठशाला के छात्रों ने विष्णुदत्त तथा जोरावर सिंह के साथ मिलकर निमेज (आरा) डकैती को अंजाम दिया तथा अंग्रेजी रिपोर्टो में यह कहा गया कि केसरी सिंह बारहठ को इसकी जानकारी थी।

आरा केस जिसमें अर्जुनलाल सेठी का नाम आया तथा कोटा केस जिसमें केसरी सिंह बारहठ को सजा हुई, दोनों घटनाऐं एक समान उद्धेश्यों, तरीको एवं योजनाओं से प्रेरित थी।

क्रान्तिकारी मुकदमें

ब्रिटिश सरकार ने केसरी सिंह बारहठ तथा अर्जुनलाल सेठी दोनों पर मुकदमें चलाये, केसरी सिंह को आजीवन कारावास की सजा देकर बिहार के हजारी बाग जेल में भेजा गया तथा अर्जुन लाल सेठी को क्रान्तिकारी अपराध अधिनियम 1919 के तहत गिरफ्तार करके निमेज हत्याकाण्ड़ की साजिश के पोषण हेतु मुकदमा चलाकर मद्रास की वेल्लुर जेल भेजा गया।

निमेज केस के सम्बन्ध में जब सेठी जी के विद्यालय की तलाशी हुई उस समय वहां एक सांकेतिक भाषा का पत्र मिला जिसके आधार पर 2 वर्ष पुरानी घटना प्यारेलाल साधु हत्याकाण्ड के मामले को पुनः खोला गया तथा केसरी सिंह को गिरफ्तार किया गया।

ब्रिटिश रिपोर्टो की टिप्पणीया

केन्द्रीय खुफिया विभाग (सी.आई.डी.) द्वारा अप्रेल 1914 की ''राजपूताना इन्दौर शड़यन्त्र केस'' रिपोर्ट के अनुसार अर्जुनलाल सेठी ने अपनी पाठशाला इन्दौर में सक्रिय कर रखी थी तथा वे युवको को शड़यन्त्र में भाग लेने हेतु प्रशिक्षण देते थे।

रिपोर्ट

यह भी बताती है कि दो लोग जिन्होंने राजपूताना में राजद्रोह फैलाने में अग्रणी भूमिका निभायी वे केसरी सिंह बारहठ तथा अर्जुनलाल सेठी ही थे।

सी.आई.डी. अधिकारीयों द्वारा अर्जुनलाल सेठी से वेल्लुर जेल में पूछताछ के दौरान उनका सम्बन्ध केसरी सिंह से जोड़ने की बार–बार कोशिश यह बताती है कि दोनों ने मिलकर एक दूसरे के सम्पर्क से राजद्रोह फैलाने में भूमिका अदा की।

अर्जुनलाल सेठी द्वारा केसरी सिंह को लिखे गये पत्रों से उनकी एक दूसरे के प्रति दृढ विश्वास एवं परस्पर सहयोग की भावना झलकती है। उनकी विदेशी सत्ता को चुनौती देने वाली योजनाओं, कार्यो एवं संगठनों में उनका परस्पर सहयोग रहा।

जेल से छूटने के बाद केसरी सिंह वृर्धा प्रवास के लिये जाते है वहां 1920–1922 तक केसरी सिंह, अर्जुनलाल सेठी, विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी सभी मिलकर महात्मा गांधी के सानिध्य में राष्ट्रवादी कार्य करते है तथा राजस्थान केसरी नामक प्रसिद्ध समाचार पत्र का संचालन करते है।

उपसंहार

राजपूताना में क्रान्तिकारी गतिविधियों, शिक्षा एवं समाज सुधार की अगवायी एवं नेतृत्व करने वालों में केसरी सिंह बारहठ तथा अर्जुनलाल सेठी का नाम अग्रणी है जिन्होंने अग्रेजो की कूटनीति का पर्दाफाश करके राजपूताना में राष्ट्रवाद के बीज बोये तथा राजपूताना के स्वतन्त्रता राजसूय यज्ञ में महत्वपूर्ण आहुति दी।

अतः इन दोनों वीर नायको के योगदान को राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्य धारा से जोड़कर देखने की जरूरत है तथा भारत के सम्पूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन को एकीकृत स्वरूप देने हेतु यह आवश्यक भी है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 देवीलाल पालीवाल, बृजमोहन जावलिया, फतेह सिंह मानव–क्रान्तिकारी बारहठ केसरी सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व खण्ड –1 एवं 2– राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर 1984
2. मोहनलाल गुप्ता – क्रान्तिकारी ठाकुर केसरी सिंह बारहठ–शुभदा प्रकाशन जोधपुर 2000
3. शाह मनोहर सिंह डांगी–शाहपुरा काल सौरभ–डांगी स्मृति संस्थान शाहपुरा 2002
4. चौधरी रामनारायण, हरिप्रसाद अग्रवाल–राजस्थानी आजादी के दीवाने (अर्जुनलाल सेठी राष्ट्रीय ग्रन्थ माला)–प्रताप प्रकाशन ब्यावर 1938
5. श्री कृष्णसरल–क्रान्तिकारी कोश –प्रभात प्रकाशन दिल्ली 2012
6. सुमनेश जोशी, टीपू सुल्तान–राजस्थान में स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी–ग्रन्थागार सांगानेरी गेट जयपुर 1973
7. सवाई सिंह धमोरा–राजस्थान केसरी ठाकुर केसरी सिंह बारहठ–शाहपुरा स्मारक समिति ।
8. शंकर सहाय सक्सेना का लेख–स्वतन्त्रता संग्राम के तीन महान देशभक्त ।
9. प्रो0 सज्जन पोसवाल–स्वतन्त्रता आन्दोलन और हाड़ौती का साहित्य–राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 2003
10. डॉ0 गजादान शक्तिसुत–क्राान्तिकारी बारहठ परिवार गौरव ग्रन्थ शाहपुरा स्मारक समिति 2022
11. औंकार सिंह लखावत–स्वतन्त्रता राजसूय यज्ञ में बारहठ परिवार की महान आहुति–तीर्थ पैलेस प्रकाशन जयपुर 2012
12. अर्जुनलाल सेठी द्वारा केसरी सिंह को लिखे पत्र–राष्ट्रीय नेता पत्र फाईल नम्बर–1–माणिक भवन कोटा।
13. अर्जुनलाल सेठी सम्बन्धी राष्ट्रीय अभिलेखागार दिल्ली की फाईले।
    Home /Poll/June 1918 Part-A/281-307
    Home /Poll/Nov. 1919 Part-A/180-192
14. केन्द्रीय खुफिया विभाग (सी.आई.डी.) की राजपूताना इन्दौर शड़यन्त्र केस फाईल की गोपनीय टिप्पणीया।
15. ए.जी.जी. राजपूताना का जयपुर महाराजा माधोसिंह को पत्र 7.08.1914
16. रणजीत सिंह कृत्य केसरी सिंह बारहठ की संक्षिप्त जीवनी।